

253
Bhasvati

आश्विन सप्तमि
1.837 I
ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रणम्य चाडौ गगानाय कंच च रुडात्मके वि
भा ॥ १९ ॥ द्विविनाशनं च ॥ शस्यते लोकहिताय वक्ष्ये कुरुवाधिकं भा
स्वतिनामसुत्रम् ॥ १ ॥ नन्वासुरारश्चरणाविन्द श्रीमान्मत्त
नन्दईति पशिद्ध ॥ तं भास्वति शिवाहितार्थमाशुके विहिते
शिपश्येवेकै ॥ १००० ॥ साकोननान्दिदुष्टगानुयुक्त ॥ ३१७ ॥ ति

कलेर्भवत्यद्यगगासुहृते वियं नभो लोचने वेदहिन ॥ ४२०० ॥ शाखा
पिण्डो कथितसयव ॥ २ ॥ अथ प्रवक्षे मिहिरोयदेसातसुर्यमि
द्वात्सर्मसमासाथ ॥ सोम्याद्यपिण्डसोमसुनेदृष्ट ॥ १००० ॥ स्तानाग्नि
॥ ३४९ ॥ युक्तो ह्येतैरविभक्त ॥ ३ ॥ लब्धनगौशे ॥ ० ॥ सितमंगयुक्तः सु
र्यादिसमस्तसमयादि कस्यात् ॥ शेषं ह्येयो ह्यपृथक् गजासाः

भा॥ २॥

॥ १०८ लवोवोदईको क्ववयात् ॥ मह अनिष्ट ॥ १००० ॥ विविधो नि
धा ॥ १० ॥ स्वसिद्ध ॥ २४० ॥ भागोन भवक ॥ २७०० ॥ शेषः ॥ वषेच ॥ ५०
शंयुक्तदशद्य ॥ १० ॥ शुद्धिश्च डाष्ट ॥ ८९ ॥ भागो भ्याधिकशशां
क ॥ ५ ॥ रुडा ॥ ११ हतो वेद ॥ ४ ॥ युतमि वेद ॥ ४३ ॥ शेषश्चतुः
षाष्टि ॥ ६४ ॥ गुणोरदाद्य ॥ ३२ ॥ पृथक् रवरागाप्त ॥ ७०० ॥

ति ॥ २ ॥

युतेकुकेडे शुद्धाष्ट भागो दनवाश ॥ २० ॥ युक्तः ॥ केडा द्ववद्या ॥ ११ ॥
दिसुनेत्रचन्दे ॥ १२५ ॥ लवो नितो मध्यविधु क्ववयात् ॥ पातशर
॥ ५ ॥ द्योनगनेत्रयुक्ते ॥ २७ ॥ त्रिनन्दशेषागगगाग ॥ ९३ ॥ निष्टुर्द ॥ ७
॥ डोरिन्दुगामा ॥ ३१ ॥ प्रवगाम ॥ ३० ॥ दिनशशोष्टन्द्यात्युनरगचन्दे
॥ १६ ॥ डेसांतरदृगगगितत्यमाद्य ॥ मतिहकल्यांतशमोक्ववः

भा॥३॥

स्यात्॥८॥ अत्रिदेशाद्भुतयोजनागिसगण्यवार्गो॥५॥ स॥६॥ भाजि
तानि॥ हिनाधिकगमगारावे॥२०६॥ चकुर्याद्वायाकुवेदे॥४९॥ फ
लमैगुलानि॥९॥ अदेसजायाविक्रवतयुभास्यात्यचतुर्दशां॥२६५॥
तीरितातिद्या॥ शते॥१००॥ नभक्तं भवतिहल्लब्धदेशान्नाश्रुय्यशशो
ककेन्द्रे॥१०॥ रवेशप्रकराभुक्तीखननश्च॥९०॥ विधुम्पता॥ शतके ति॥३॥

॥१००॥ न्दस्यैवभुक्तिग्राहश्चखजिना॥०॥ २४॥ गति॥११॥ ॥ इति श्री
शतानन्दचार्यविरचितेयाभास्वीतिकर्तातिथिध्रुवाधिकारप्रथ
मोध्याय॥ १॥ आखाद्यसौराद्यगणात्कलेर्वावर्षादिषामप्र
॥७॥ रुतावशेषा॥ शुक्रेन्दुवाचम्यतिशुष्यशौम्यः शनिश्चराशक
मसो भवति॥१॥ अडोक॥१२॥ निघ्नोरवितामयुक्तः सप्ता॥७॥ वः

भा. ॥ ४ ॥

शिवारविमामनाद्याः ॥ ज्युक्तसूर्यसुज्यमौलिचन्द्राजुगात्सावनमा
मतो न्ये ॥ २ ॥ अष्टपृथक्करो म ॥ ११० ॥ गुणोशरागामाक ॥ ९३७५ ॥
लवेन्द्रिगचन्द्रयुक्त ॥ १५ ॥ ॥ तत्त्वष्टिरोयोदिशुभिजुगानिलवाध
निशेषोगिरिसममास्यु ॥ ३ ॥ अष्टखेशग ॥ ११० ॥ गोदियायचचन्दे
खलोचना ॥ २५१५ ॥ भास्वतिकर्गोयोक्तसुमितिहिरोदिता ॥ ४ ॥

ति ॥ ४ ॥

शास्त्राद्यपिराडोत्सुवाहचट् ॥ ६३८ ॥ द्वाशशितरस्मिज्वलनो ॥ ३० ॥
महिज ॥ शताहतदादशराशिचक्रे ॥ १२०० ॥ शेषानिबाने ॥ ५४ ॥
युतोष्टदात् ॥ ५ ॥ जोचखवाञ्चि ॥ २०० ॥ धूमधोदश ॥ १० ॥ द्वातिथि
दु ॥ १५५ ॥ लब्धगगान्धि ॥ २६६ ॥ हिनः ॥ शता ॥ १०० ॥ हतोधखन
वा ॥ ९० ॥ प्रनेचसूर्या ॥ १२२ ॥ ध्यजोवोष्टनखाश ॥ २० ॥ युक्त ॥ ६३

भा॥५॥

विष्णुस्वरघा॥७५०॥ कवरात्रियुक्त॥३९५॥ सितोचमाद्यकुन्टये
१६९॥ शत॥१००॥ द्यात्॥ स्ववेद॥४०॥ निघ्नो विनवेष्टु॥५९४॥
युक्तशनिर्दसा॥१०॥ द्यात्साहितश्चश्ले॥१४॥ ॥७॥ भौमेरवागिर
सालेक॥ ६३८११॥ साहिताश्वाहुनागेन्द्रवसप्रग्नि॥१८२॥ ३
७॥ प्रयुतागूरोशशिदिमोनन्दा॥१०१॥ ९॥ चितोवैध्रवे॥ शुक्लव्यास ति॥५॥

सराड्योर्गुणा॥७५०॥ ३७॥ युक्तेरिषवेदापरैल्लोकादि॥४०॥ स्व
नवद्वयेजिन॥२९०॥ २४॥ युताराहुर्गतेवसो॥८॥ शकाद्योगुणिः
तोरासै॥३॥ सु१॥ सिधोमुनिनाहत॥ रव्यादिक्रमतोराजामन्त्रित
स्पचतुर्थक॥१०॥ अनन्तो॥ वाश्रुकि॥ पयो॥ महापय॥ चतक्ष
क॥ कुलिहर॥ कर्कोट॥ ईरवाच्यस्तोनागाप्रकर्त्तृति॥११॥ शा

भा॥ ६॥

कशगाक॥ १॥ सयुक्तेमुनि॥ ७॥ भिभागहारित॥ आवहृदिक्मे
वमप्रवाताप्रकिर्त्तिता॥ १२॥ आवहृ॥ प्रवहृ॥ श्वैवशभवो॥ विवहृ॥ स्त
था॥ उद्वहो॥ निवहो॥ वायु॥ शप्रवाताप्रकिर्त्तिताः॥ १३॥ शाकः शरा
ग्नि॥ ३५॥ सयुक्तेवेदे॥ ४॥ नैवावसेविते॥ आवर्त्त॥ दृष्टिः॥ सवर्त्त॥ पु
ष्करः॥ शोणमसुड॥ १४॥ आवर्त्तनिर्जलोमे॥ सवर्त्तवायुपुरक॥ पुष्क ति॥ ६॥

रेडुष्कराद्यैः शोणमसुवतिमिह॥ १५॥ युग्मा॥ ३॥ ज॥ १॥ गो॥ २॥
मिन॥ १२॥ गतेशशाकेगविर्यदाकर्कटसप्रयाति॥ जलंसटा॥ १००॥
ध्यहरि॥ ५॥ कार्मुके॥ ९॥ दुसुक्त॥ ५०॥ कंन्या॥ ६॥ स्त्रि॥ १०॥ यो
गमिति॥ ८०॥ कुलिल॥ ४॥ कुंभा॥ ११॥ लि॥ ८॥ तुला॥ ७॥ गतेडो
वजेउविग्वरानति॥ ६॥ सदाति॥ १६॥ शमुद्देदश॥ १०॥ भागा

भा ॥ ॥

श्रवणपर्वते ॥ पृथिव्याचतुरोमाग ॥ ४ ॥ सोम्यवर्ष
तिवासव ॥ १७ ॥ दशयोजनविलसर्गशतयोजनमायुत ॥ आठक
सुविजानीयायमवर्षतिवाशव ॥ १८ ॥ गुणोन ॥ ३ ॥ गुणितशाके
मप ॥ ७ ॥ मिभागनाहरेत ॥ शोभयमा ॥ २ ॥ रुतंकन्वायच ॥ ॥
तन्निनियोजयेत् ॥ १९ ॥ यथाशाकतथालवायशेषपुर्वशेष ॥ ति ॥ ७ ॥

वेत् ॥ मेद्यो ॥ धान्य ॥ तृणाचैव ॥ शित ॥ रोडु ॥ शमिरगाम् ॥ २० ॥
प्रजानाचतथाष्टिद्वेष्टोचनपविगृह ॥ ऐतेनममाव्याताः सेव
शाकावृतोमुहु ॥ २१ ॥ शाकोवेदे ॥ ४ ॥ अगुणितपर्वतर्भा
॥ ७ ॥ ममाहरेत् ॥ द्वि ॥ २ ॥ द्यौरूपे ॥ १ ॥ शाशयोज्यक्षुधाध्या
क्रमतोभवेत् ॥ २२ ॥ क्षुधा ॥ तथानिडा ॥ आलस्य ॥ द्वि

भा ॥ ८ ॥

म ॥ पचक ॥ शान्ति ॥ क्रोध ॥ रसमो ॥ लोभ ॥ उत्साह ॥ अतथोद
शा ॥ २३ ॥ शिरसो ॥ गोमस ॥ श्वैव ॥ पाय ॥ पुन्य ॥ वतुदश ॥ २४ ॥
विक्रमार्कचपलमग्निभि ॥ ३ ॥ सगुणविवेचये ॥ ५ ॥ समचि
त ॥ अदि ॥ ७ ॥ शेषमवलोक्य शोचन्ते न तत्र देव जनित शुभाशुभं
॥ २५ ॥ अश्वि ॥ २ ॥ वेद ॥ ४ ॥ सर ॥ ५ ॥ वही ॥ ३ ॥ भिर्महजायतेषु
ति ॥ ८ ॥

लुभित्यमुन्नमं ॥ वीर्य ॥ ६ ॥ रत्नविधुपयोधरश्च उगोचरपातिभय
महत् ॥ २६ ॥ ॥ इति श्रीशतानन्दचार्यविरचिताया भास्वतिक
श्रीग्रहध्रुवाधिकारादित्योध्याये ॥ २ ॥ ध्रु ॥ २ ॥ चिशो ॥ ३० ॥ हु
रामेयः सुवार्कमासादिने समेतारितुवासरोनाः ॥ शुचन्दमेतन्नग
॥ ७ ॥ भक्तशेयाः चाराभवन्त्यहमुखाद्युनाया ॥ १ ॥ चन्द्रा ॥ १ ॥ श्वि ॥ २

भा॥९॥ बह्नि॥३॥ युग॥४॥ भुत॥५॥ रसा॥६॥ श्वि॥७॥ यदा॥८॥ रा॥५॥ भु
त॥५॥ विषया॥५॥ अथवाकमेरा॥ सखादिरासिबुखरास॥३०
॥ ग्रा॥ बुद्ध्याभुक्ताशकैश्च शहितभवन्तीदृष्टम्॥२॥ भुर्य्य॥३॥
शोभयामिषयप्रदयाष्टयकशता॥१००॥ प्राकमशश्चवन्दा॥
शोभाश्चभुक्तेनितभोग्यनिष्ठाशता॥१००॥ प्रयुक्तेभ्यदिकं॥३॥ ति॥९॥

स्फुर्तेस्यात॥३॥ भुर्य्यस्यपेचा॥५॥ क॥९॥ रवि॥१२॥ न्दु॥१४॥
भुपा॥१५॥ यना॥१७॥ नैवेन्दु॥१९॥ कयमा॥२१॥ जिला॥२४॥
श्च॥ सप्ताश्विनाश्च॥२७॥ न्दुगुणा॥३१॥ रसाग्नि॥३६॥ घत्रि
॥२४॥ श्वताना॥४९॥ दिशरा॥५७॥ शरागा॥६५॥ ॥४॥ पंचा
दयो॥७५॥ वेदराजा॥८४॥ कृताच्या॥९४॥ सिरवेदवा॥३०९॥

भा ॥ १० ॥

भाउभुव ॥ ११२ ॥ कुशुर्व ॥ १२१ ॥ ॥ अह्ना श्ववश ॥ १२८ ॥
रामचन्द्रा ॥ १३५ ॥ अन्डा विचन्द्रा ॥ १४१ ॥ शरवीर्जशा श्वः
॥ १४५ ॥ ॥ ५ ॥ रूपो ॥ १ ॥ नद्युगुगां कृत्वा तु दर्शो जन्म कालि
कि ॥ श्रुत्योदयो दिव्यो का विलिखेत्स च वा पुन ॥ सोक्त
मार्गस्य कुर्यात् गुह्यता कालिको भवेत् ॥ ६ ॥ भागति ॥ १० ॥

इवेशप्र ॥ ७ ॥ गुगाद्वता ॥ १०० ॥ प्रसप्ता ॥ ७ ॥ वितर्यात्सुदश्रुत्यु
क्ति ॥ खनन्द ॥ ९० ॥ निघ्नोति धयशशा के केन्द्रशत ॥ १०० ॥ घाति
धयप्रदया ॥ ७ ॥ केन्द्रे कमात्सुदश्रुत्यु ॥ २५ ॥ ६ ॥ सोः
धोविधोस्यागमगविदश्वै ॥ २४५ ॥ दद्युदन्दाशद्वितः खश्रुत्यु
॥ १२० ॥ अर्द्ध भागोन्युतसमाधात ॥ ८ ॥ अर्द्ध भागाविद्युवाः

भा॥११॥ दिमासैय॥०॥चन्द्र॥२॥नेत्र॥२॥दोय॥२॥चन्द्र॥१॥ब॥०॥शायुनर्घुष्ट
द्राहुगारोयु॥५०॥लव्वशितायुकेडेतुयुतयल्लु ज्पात॥९॥ त
त्यचहस्फशत॥१००॥तश्चरवाडाभोग्योद्वशाश्चस्फुटस्यात॥
ईन्द्रोव॥०॥रूपो॥१॥मि॥३॥रसा॥६॥रवचन्द्रा॥१०॥नृपो॥१६॥जि
ता॥२४॥पंचगुगा॥३५॥समाधि॥४६॥॥१०॥गवहि॥६०॥सराग ति॥११॥

॥७५॥कुनवा॥९१॥रुकाह्या॥१०८॥चदानवो॥१२६॥राम
मनु॥१४३॥नर्वाह॥१७५॥खाकभुवो॥१९०॥दि
खाश्चि॥२०२॥विखाश्चि॥२१३॥ज्यात्याश्चि॥२२२॥रवगम
दत्रा॥१४३॥॥११॥पचाग्निह॥२३५॥गोनिजिमा॥२३९॥
कुमिदा॥२४०॥नेत्राविह॥२४२॥वीहृजेना॥२४३॥विसिः

भा॥१२॥

ह्रा॥३४३॥भूतिर्नवया॥९०॥चित्तभोग्यमिन्दोर्केनच
डात्रिधवगवनेदे॥९०॥१२॥शेषोनकागवा॥९०॥गारागाग
॥६०॥निघोभुक्तयतराग्रा॥८३॥द्यतिकामभवन्ति॥शता॥१
००॥प्रमृक्षाशत॥१००॥शोधिताशांघट्या॥६०॥हताभु
क्ति॥९०॥हृत्प्रनाच॥१३॥रामिशशाकाछरजातिल
ति॥१२॥

२२५॥नक्षेत्रयतत्द्यतिकामश्रेष्ठा॥एवविन्दायुतितश्रयागामप्रा
७॥चिताचन्द्रगति॥९७॥स्नुहारा॥१४॥अर्केनचन्द्राशराधि॥४
५॥हिनततोवसिष्टाशराधि॥४५॥लक्ष्मी॥सप्रा॥७॥वसेयाकरगा
ववाद्यतन्नादिकायास्तिथिवद्भवति॥१५॥परेदरेहृत्तचतुर्दशीच
तित्यार्थ॥शकुनिश्रुतुयात्तनाचकिस्तुष्टमितिक्म्यराचत्वारि

भा. १३

यत्करणातिनित्यं ॥ १६ ॥ दिनेदिनेहर्गारूप ॥ १ ॥ युक्तशौचै ॥ ७ ॥ वस्त्र
न्यूनं ॥ १० ॥ निन्दे ॥ गवरेन्दु ॥ १०० ॥ केन्दुतियुतप्रकुर्यात्प्राग्व
कुर्यात्कुर्यात्प्रसाधे ॥ १७ ॥ ॥ इति श्रीशतानन्दचार्यविरः
चित्त्याभाखतिकर्णतिथिनक्षत्राद्यानयनाविकारोत्तृतियो
ध्याय ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ भौमोम्बर ७ ॥ द्वाद्युमनात्कृता ४ ॥ प्रपुनर्द्यु ति ॥ १३ ॥

वृन्दाश्रीशता ॥ १०० ॥ प्रहिन ॥ अष्टष्ट ॥ ८८ ॥ शेषखरवगम ॥ ३००
॥ निघ्नक्षयाक्षि ॥ २२ ॥ भिमोममुतश्चिशिष्य ॥ १ ॥ गुरुर्गुरा ॥ ३ ॥ प्रा
द्युयगाद्दसा ॥ १० ॥ प्रवेदाद्वि ॥ ४४ ॥ भिलक्षविवजित ॥ वेदा ॥ ४ ॥
हेतोधोगुरा ॥ ३ ॥ भागयुक्तशितस्यशिष्यशहितखशक्ते ॥ १०४ ॥
॥ २ ॥ शनिर्द्युन्दामव ॥ ९ ॥ भक्तलक्षकवासुतारव्युदयेस्यनध्या

भा ॥ १४ ॥ ॥ भवन्निजिबार्कजभुमिपुत्रा जभागवैशिद्यगतिभवगासु ॥ ३ ॥ दिष्टा
 ॥ १० ॥ घनो ११ ॥ नाश्वपृथक् रवनागा ॥ ३० ॥ शहितामि ॥ ३ ॥ भिर्भ
 गुत्तोकिबुजैज्यशिद्यु ॥ अष्टे ८०० ॥ सु ५०० ॥ रवट ६०० ॥ न
 न्द ९०० ॥ चतु ४०० ॥ शताध्वपृथक् रवहायड ॥ ६ ॥ वैतैव्यकेडा
 ॥ ४ ॥ रुन्डा ११ ॥ नवेन्दु १९ ॥ द्वियमा २२ ॥ नवेन्दु १९ ॥ रुन्डा ११ ॥ ति १४

अभोयोडवयुक्ताहिगा ॥ घना ११ ॥ ग ३ ॥ नाग ८ ॥ चयो ३ ॥ सूर्य १२
 निद्योदशे १० ॥ ॥ ६ ॥ ताहिनाधजचमथ ॥ ५ ॥ पृथक् रवशीद्योनितकेड
 यभा ॥ ६ ॥ त्रिद्योश्चशिद्योनयुतस्फुटस्यात् ॥ पचराशिस्थितोयत्र
 वि ३ ॥ घनैवैवकलयत् ॥ ६ ॥ ॥ गृहाश्चशीद्योनिमकायदास्यादने
 धनेवासरागमिशय ॥ राशीविनाकान्निगुरागान्यकुर्ज्यात्तदातत

भा॥१५॥ शिद्युपरायमाधो॥७॥ भौमस्यखादि॥४०॥ नगसप्त॥१७॥ वेसाः
११०॥ देवेन्द्र॥१३३॥ जातिन्दु॥१२२॥ गगो॥९७॥ नगर्था॥५७॥ जे
शार्क॥२७॥ मागिबु॥५३॥ कुशाप्र॥७॥ यतश्चरा॥७६॥ त्रिपंच५३
मप्राग्नि॥३७॥ नवेन्दव॥१९॥ स्मृता॥५८॥ गुणेनृया॥१६॥ रवा
ग्नि॥३०॥ गजाचयेन्द्र॥३८॥ गवइधयो॥३६॥ रामजिमा॥२३॥ ट ति॥१५॥

पाका॥९११७॥॥८॥ भृत्यादिवेद॥४२॥ कुगजा॥८९॥ रवसूर्या
१२०॥ व्योमाह॥१५०॥ नागोत्तु॥१४८॥ भभु॥१२७॥ त्रिजोला७३॥
॥शगादृशो॥१०॥ द्या॥१७॥ कुयमा॥२९॥ नवन्दु॥१९॥ द्विभू॥१२॥
यसोमंगल॥८॥ सवय॥४॥ अ॥९॥ रवेशराव॥७॥०॥ नवतिस्व
॥७०॥०॥ मिन्दौकन्दशभू॥१००॥७॥ तमसममिधौ॥०॥ २४॥ पा

भा. १६

दैनं ॥ ११४५ ॥ ग्नामगनौ ३ ७ ॥ खमेद्यौ ० ७ ॥ अद्यौ ३ १३
खमेद्यौ ० ७ ॥ वनिजाडिकानाम् ॥ १० ॥ त्रयोद्यना ॥ ३ ७ ॥ वित्त
डभानलौ १३ ॥ ३८ चत्रयोद्यना ॥ ३ ७ ॥ पंचनद्या ५ १७ ॥ गणा
द्या ३ १३ ॥ ॥ कुगजादिशिद्युस्यचभूक्तयश्चरुक्तासमृतासै
गरितप्रविशौ ॥ ११ ॥ द्यना ७ ॥ ग ७ ॥ नाग ८ ॥ नृ ३ ॥ गवि १२ ॥ पुः

ति ॥ १६

कुक्ति-या-ग-रु-ता-वारवशता १०० ॥ प्रलब्ध ॥ ३ च भुवराडसहित
न्या-म-द-सु-र-ता-भुक्तिरियकुजादे ॥ १२ ॥ मदस्फुरताशि
भु-ता-१२ ॥ ॥ अपागवत्कृता भाग्यरुताशता १०० ॥ ॥ ॥ बोहो
लेभोगे-स्व-रायद्यास्याद्वक्तृतिचारेविधरितशोध्य ॥ १३ ॥
भाडिहृत ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ९ ॥ हुतोयहासुरास्यादिरके ॥ ९ ॥ ग

भा॥१७॥

शितकृता ४॥ प्र॥ भाडिर्भवेद्रादिपुराशिहाराशराहृति
॥२२५॥ राशिमुयेडांत १००० च॥ १४॥ विष्वा १३ श्वि २
गधर्व ८ नावा २० ग ६ मासौश्चकाईकेडाहिति
जाबुस्य ॥ यदध्वयो ३६ ददश १०२ राशि १२ भार्या ५७
वेदश्रिनो ४२ सप्र ७ रसा ६ क्रमेणा १५॥ स्वशिष्य ति १७॥

केडस्य गद ली र्वा पशवककया ल ॥ ६० ॥
१६ ॥ भ ॥ १६ ॥ कगुरा ॥ ३९ ॥ कुदआ ॥ २५ ॥ चकदितप्राग्य
१६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥
१६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥
१६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥
१६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥

भा॥१८॥

॥७१३॥ जिवोरियटयवैते॥७८८॥ ॥श्रुकेवेयुरौ॥ ८५०॥ ख
राभूतगायोवाह्निनुनागे॥ ८१३॥ उराकौटिल्यपरिहतेचकरग
१२००॥ तिर्माभवहोविते॥१८॥ भौमोसुदहताग्रहे॥ ९३॥
खजलधे॥१७०॥ सौम्योरिवेदा॥ ४८॥ गुरुर्व्यामाह्ये॥ ८०॥ भृगु
जोयेमोरिपरम्य॥ ८८॥ केडेवशिद्योविते॥ लध्वंस्तशशिज

ति॥१८॥

वयंशजते॥ ८८॥ काहारिष॥ ८५०॥ भा॥ विदस्मिचकादि
स्वाधनमहुरयकातकुषेचरा॥ १९॥ परप्रभातत्वं २५ हतार
राते॥ १००॥ सुकास्फुटाकोसमायेदास्यात॥ यास्यातदास्या
॥ १०॥ योनिसुभा॥ नागत्वम्यसुगारिहत्॥ २०॥ सुदृढमष्टा॥ ८
हततत्॥ ११॥ लध्वंस्तशशिज॥ २॥ तुचकात्॥ १००॥ ॥

भा॥१९॥

शोभ्यते गह्वरविप्रतिग्यात्रक्षत्रयोराशिगतिश्चतद्वत्॥२१॥ पा
तध्रुवाब्जादिगुणाकृत॥४॥ द्वादश॥१०॥ प्रयुक्त॥२०००॥ भगव
शोते जेतु॥ राहुमवक्रगतिस्फुटस्यातडादिस्तुक्कार्धयु॥१३५०॥ त
स्तुपुट्॥२२॥ भद्रवंध्रवकेन्दुस्यादिद्युकेन्दुस्फुटग्रहम्॥ क्र
वसिद्यान्तरासूर्यात्स्फुटभक्तयविभाजित॥२३॥ लब्धं फलीदिना

ति॥१९॥

दिस्यादधिक॥५॥ केन्दुके॥ धनोदनगोक्षीदिने॥
ध्रुवके॥२३॥ ग्रहेवक्त्रे गते मार्गे पातवक्त्रा॥६००॥ ध
केतया॥६॥ राहोदरात्वरानस्यांध्रये पुनचक्रके॥२५॥ क्र
वके॥२॥१२॥ चक्राद्व॥६००॥ उदयास्तकृत्वौ तथा॥ व
क्रमा॥६॥१॥ कथितो ध्रुवकेन्दुके॥२६॥ राहोदरा

भा॥२०॥ डि॥२॥५॥ वदाहति॥६॥ २२॥ युक्कर्कियमाहे॥२॥ ५६॥
हीगितत्वे॥६॥ २५॥ स्त्रिहकभा॥२०॥ मद्रिहिशार॥४॥ ५२॥ सु
गास्यादीव्यद्वि॥६॥ ४७॥ धनुकुमेद्या॥१॥ १७॥ ॥ २०॥ म्दगो
दगहागि॥२३॥ द॥ द॥ क॥ तार्थ॥४॥ ५॥ मिगाशराजव॥५॥ ५६॥
चरावदज॥ वी॥ स॥ द॥ डे॥ वि॥ सु॥ व॥ त्प॥ द॥ ज॥ स॥ क॥ न॥ यो॥ र्क॥ स॥ द॥ अ॥ र॥ ता॥ ति॥ २०॥

सु॥२६॥ मि॥ न॥ १२॥ १॥ ज॥ त॥ अ॥ न॥ द॥ श॥ त॥ त॥ ॥ ६॥ १०॥ अ॥ त॥ म॥ ॥ अ॥
न॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ अ॥ त॥ ॥ अ॥ न॥ त॥ स॥ म॥ स॥ व॥
कु॥ भ॥ यो॥ ॥ २॥ ५॥ वि॥ ज॥ ले॥ स्या॥ त्प॥ मे॥ व॥ न॥ दु॥ दु॥ भि॥ न॥ द॥ दि॥ शो॥ च॥ त॥
म॥ ॥ इ॥ ति॥ ग॥ म॥ च॥ तै॥ व॥ सु॥ भि॥ ॥ अ॥ त॥ रो॥ त॥ म॥ ॥ इ॥ ति॥ श्री॥ म॥ त॥ न॥ न॥
वा॥ अ॥ वि॥ च॥ ता॥ या॥ भा॥ स॥ च॥ ति॥ क॥ र्गो॥ ग॥ ह॥ स॥ प॥ द॥ वि॥ का॥ ॥ न॥ तु॥ यो॥ य॥

भा॥ २१॥ ये॥ ४॥ ४॥ ४॥ रुपाक्षिवेदे॥ ४२९ गदितद्वकाद्यादिना
यचन्यनभोगारामे॥ ३६००॥ स्वल्यात्त्वकिपाद्युक्तादि
॥ २॥ भक्ताद्युतेन॥ १००॥ लवुअयनाशकासु॥ १॥ घुवन्दतोः
गाढकभि॥ १८७॥ गजासुदै॥ १७८॥ त्वलैर्गनैः आनर
दक्षिणोतुः॥ ततः स्वगामे॥ ३०॥ कमशश्चदद्यात्साई॥ ४५॥ सः
ति॥ २१॥

वट॥ ३५॥ च॥ १५॥ चराद्व॥ २॥ प्रपम॥ ३॥ दमा॥ ३॥
प्रपचेत्त॥ १५॥ तथैभृशाचगोलात्॥ अहल्लेखस्तमोने
शातयोगितव्यान्नितनतच॥ ३॥ वटप्र॥ च॥ चराईदश॥ १०॥ ता
गादेनपा॥ रामासयते॥ १॥ तद॥ २॥ क्षिदिनाशि॥ ३॥ विगु
मयुत॥ १॥ हृद॥ ४॥ शिवात॥ प्रभास्यात्॥ ४॥ हृद॥ ५॥ १०॥ शत

भा॥२२॥ ॥१००॥ संयुताचमध्यप्रभोनाभवतिदृशक॥शता॥१००॥ हताह
ईल॥१५॥ तस्तदाप्रमर्दगतेष्वोद्यतिकालिका॥५॥ खवे
उ॥१००॥ निघादिदराहुतैष्योनादाप्रमध्यप्रभयासमेतस॥शता
॥१००॥ निततदृश॥१०॥ भिर्विभक्तलद्वागुलाद्याभवसिप्तिजायं
॥ई॥ तरायाद्योममध्यस्तनक्षत्रचनगो॥७॥ नित॥ नस्व॥२०॥ प्र

ति॥२२॥

नक्षत्रमेलप्राप्तौचातनादिका॥७॥ मध्याकाशमृगेभलनव
मोदयोमादिशत॥अमेस॥१०॥ द्विगतेवाच्यअस्तमस्यादिति
स्त॥८॥ लग्नसूर्योदयेतप्रसाध्यखमोदयेःसौरदिनाशुपा
तात॥शत॥ अथ्याच॥ई॥ नक्षत्रकासागते॥८॥ विभजेदृश
वोप॥ अथ्याच॥ शत॥ अथ्याच॥२२५॥ विभयचलद्वाजरा

भा ॥ २३ ॥

हिपेत चोदय का क्रियादिना ॥ ११॥ गण्य भोग्योदये के न शयनि ॥
जापचाश्चि प्रमे ॥ २२५ ॥ प्रलब्धम् ॥ १०॥ भुक्तोदये के श ॥ २३० ॥
र्या त्वय्या विभज्या प्रफलेन युक्ता ॥ सूर्योदयाद्या घटिका प्रक
र्या त्वय्या ॥ २३० ॥ धिको नास्व ॥ २३० ॥ प्रपुन्या ॥ ११॥ ततः क
यादिनुदयासु शोध भुक्तां वतु लोदये भविष्यी ॥ शयः सवम् ॥ २३०

ति ॥ २३ ॥

दिगुता विभजे भोग्योदया प्रभवति स लग्नम् ॥ १२॥ लग्न प्रयो
ज्ये ॥ २३० ॥ भविलग्न जामि च शन कथिता मुनिद्वौ ॥ लग्ने द
यो पूर्व वेदे वसाध्यः व्या ॥ २३० ॥ निभजेतियो भोदितम् ॥ १३॥
स्यात्पाकपाले ननते न हिन युक्त प्रकूर्याद पोरताते च ॥ न भुभते
यत्र नतं प्रवो ज्ञा घटि पुनस्त वनतं विशोधे ॥ १४ ॥ लकोदस्तत्र पु

भा॥२४॥ ननु सादृशसम्ये विलग्नप्रथमोक्तमार्ग॥ मध्यविलग्नैरसमर्द्धप्रः
योज्यपातील॥४॥ लग्नमनवदन्ति॥१५॥ लग्नचतुर्थविभुषकरत्राः
नम्यचयात्मिककलविशोध्॥ यमं विलग्नचविशोध्यशेषसम्य
॥३०॥ शस्यकियक्रमतपुयोज्यम्॥१६॥ भावदोयोर्योगदल॥२॥
लुप्तधिरुचस्थितस्यादफरोगनेहेन्द्र॥ चन्द्राब्धि॥२२॥ निघोपल

ति॥२४॥

भादि॥२॥ ताचलेकावधिस्यादिहृदक्षीराक्षि॥१७॥ दि॥२॥ गुरां
विषुवच्छावभयत्रः॥१८॥ तिलया॥ अर्का॥१९॥ ह॥१५॥ सङ्गुणै॥३६॥
लग्नचापविनाडिका॥१६॥ वेद्यका॥२७॥ नन्दसन्दीप्ति
॥२८॥ दि॥१॥१३२३॥ चक्रमोक्तमात॥ चरघटो नितयुक्तवि
नायोजनकोदयात॥१९॥ इति श्रीसतानन्दचार्यविरचिताया

भा॥२५॥

भास्वतिकर्षोत्रिपद्माधिकारपचमोध्याय॥ ५॥५॥५॥ द्वि॥
द्योविपर्वकता॥४॥ प्रयुक्तेदिगि॥१०॥ स्तमोह॥८॥ प्रदि
नाक्रवाध॥ तमोयुकाभीखवभा॥२३००॥ प्रमोस्यया
स्वासोत्पाशोदसा॥१०॥ शिहिन॥१॥ मानहिमावोर्गतिरति
॥३॥ हिनादि॥१०॥ घात्रु॥४॥ भिद्मृतमयुमान॥ तद्योगतो
ति॥२५॥

॥३॥ तं वज्रासुषुषाशास्फुटवर्षशब्दो॥२॥ ॥३॥ दशाः
॥४॥ शान्तिमार्कमानस्वजाति॥२२॥ भास्वतिकर्षोत्रिपद्माधिकारपचमोध्याय॥
॥५॥ ॥६॥ योगोह्यनखा॥२०॥ चितोतोर्काभाग्यानि
॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥
॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥

भा॥२६॥ शितलस्मिस्पर्शाथमुक्तिश्चतुर्दिक्काल॥४॥ग्राशाद्विश
ति॥२०॥गुरिताम्पुरतानेजमानेनभाजितविश्व॥५॥ग्रा
ह्यानावगाडाडश॥६॥संगुणाचखपच॥५०॥युक्वन्दफल
विसर्द॥हिनधनपर्वनिचन्दुभात्रोर्निमिलनानीलनणा
डिकारम्फ॥६॥दि॥२॥द्वादशे॥१२॥चयामिजे॥७॥सम

ति॥२६॥

...गतेष्ववा ॥ तदा सदा ॥ ६ ॥ ६ ॥ केचन च ॥ न च ॥ ६ ॥ सूर्य
 ... ॥ ७ ॥ ७ ॥ इति श्रीसतानन्दचार्यविरचितायां भास्वतिकं
 ... ॥ ८ ॥ ८ ॥ अङ्गुष्ठाधिकारवृत्तमेधाय ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ नता
 ... ॥ ९ ॥ ९ ॥ अजिन ॥ २ ॥ २ ॥ नताप्रतप्तस्वने ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ... ॥ १० ॥ १० ॥ निध्यानयुतस्य भास्व ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

भा॥२७॥

चकारप्रसाध्यं॥१॥पृथक्कृता॥१००॥शाधिकारुद्ध॥११॥

भक्तस्तदक्षियोगान्नितंनतिस्पात॥तद्वचनंदिगु॥१०॥ति

तगुणा॥३॥प्रनिर्धनप्रकिपरयोस्वाशो॥२॥ततस्तमसप्र

युतामरश्चशावनन्नातयुक्स्फुटस्पात॥मानरेभोगेषु

ताङ्गनन्दा॥१॥तानाहकोऽध्वनितवयचन्द्र॥३॥गताशा ति॥२७॥

च॥॥शाशवितुमतामे॥२०॥ग्राहकलक्षणेन॥॥महना

द्व॥॥शतिहसुर्योग्रहणाविशेषशमस्तुवन्दु॥॥द्विचि

त्य॥॥५॥तद्वचनसौम्यसुराविधायेयाग्यधनपवानेती

वृत्तानो॥॥स्थित्यधकेननियतप्रकृत्यीत्य॥॥शक्तिः

अभेदेदिनस्य॥५॥॥शतश्रीमतानन्द॥॥विश्वविद्या

भा ॥ २८ ॥

यां भास्वति वर्गे सूर्यग्रहणं ॥ धिकां सप्रमो ध्याय ॥ १ ॥
॥ ७ ॥ ० ॥ खवेन्दुवेदा ॥ ४९०० ॥ धिकभास्वरस्य प्रागोदचक्र
॥ २७०० ॥ प्रदिशशरश्च ॥ तत्वाह ॥ ८० ॥ भागास्पष्टति भुः
धाशो यथा दिशवस्तमितरवराशो ॥ १ ॥ मध्यदिनात्प्रा
कपरतत्तमो म्याया म्या न तस्या दधतत्कृतिश्च ॥ कृ

ति ॥ २८ ॥

त्वास्तु तुल्याऽन्यदिशो क्रमेण प्रागान्तरवावरनारवि
न्दे ॥ २ ॥ माणसादेस्वरातस्य पच ॥ ५ ॥ भागौ शाद्वके
॥ १० ॥ बह्वगलाघा ॥ चन्द्रार्कमानागलमगलासारवः
राशौ ॥ ७०० ॥ भक्राबलरागलानि ॥ ३ ॥ नाद्राकयोः
द्विक्रमसराडलेशो सत्त्वापलव्यवलनायुधे ॥ मध्यः

३०॥

द्व्याश्रित्वेवेदा॥४२००॥ द्दगतेयुगादिदिव्याश्रित्वा श्रीपु
रुहोन्नमस्य॥ श्रीमान्सतानन्दइतिदमाहसरोतिः
सकलयोगुज॥१०॥ ॥ इति श्रीसतानन्दनाथविरचित
तायाभास्वतिकर्णपरिलेखाधिकारअष्टमोऽध्यायः॥८॥
लेखकगोपिनाथसम्बत१८८१गार्गशुद्धि१राज१शुभं ति॥३०॥

आर्य समाज
ASMA ARCHIVE

1.837

I